तात्पर्य

परमात्मा तथा उनके अणु-तुल्य भिन्न-अंश जीवात्मा में चिद्गुणों में अभेद है, दोनों में समान चिद्गुण हैं। यही कारण है कि आत्मा देह के समान विकारी नहीं है। इसलिए आत्मा को **कूटस्थ** भी कहा जाता है। देह में छः प्रधान विकार (परिवर्तन) होते हैं। माँ के गर्भ में उसका जन्म होता है, कुछ काल तक अस्तित्व में रहता है, बढ़ता है, कुछ उत्पत्ति करता है तथा क्रमशः क्षय को प्राप्त होकर अन्त में लुप्त हो जाता है। आत्मा इन सभी विकारों से नित्य मुक्त है। वह अजन्मा है, जन्म तो केवल उस देह का होता है जो उसने धारण की है। आत्मा का कभी जन्म-मरण नहीं होता। जन्म लेने वाले की मृत्यु भी अवश्य होती है। इस न्याय से अजन्मा आत्मा के लिए भूत-वर्तमान-भविष्य का भेद नहीं है। वह नित्य, शाश्वत् तथा पुराण है, उसकी उत्पत्ति का कोई इतिहास नहीं है। देह में आत्मबुद्धि रखने के कारण ही हम आत्मा के जन्मादि का इतिहास जानना चाहते हैं। देह की भाँति आत्मा कभी वृद्ध भी नहीं होता। यह इसी से सिद्ध हो जाता है कि वृद्ध कहे जाने वाले व्यक्ति भी अपने अन्तर में उसी आत्मतत्त्व का अनुभव करते हैं, जैसा यौवन या शैशव में किया करते थे। देहगत विकार (परिवर्तन) आत्मा का स्पर्श नहीं कर सकते। आत्मा, वृक्ष, आदि किसी प्राकृत वस्तु के समान क्षय को प्राप्त नहीं होता। आत्मा से उपसृष्टि भी नहीं होती। देह से उत्पन्न सन्तान अलग-अलग जीवात्माएँ हैं; देह के सम्बन्ध से ही वे किसी की सन्तति प्रतीत होती हैं। आत्मा की उपस्थिति से देह विकसित होती है; किन्तु आत्मा में विकार अथवा प्रजनन नहीं होता।

अतएव यह सिद्ध हुआ कि शरीर में होने वाले छः प्रकार के विकारों से आत्मा सर्वथा मुक्त है। 'कठोपनिषद्' (१.२.१८) में इसके सदृश एक श्लोक मिलता है—
है—

न जायते म्रियते वा विपश्चिन्नायं कुतश्चिन्न बभूव कश्चित्।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो न हन्यते हन्यमाने शरीरे।।

इस श्लोक का अर्थ और तात्पर्य भगवद्गीता के उपरोक्त श्लोक के समान है। परन्तु यहाँ एक विशिष्ट शब्द का प्रयोग हुआ है : **विपश्चित्** अर्थात् 'ज्ञानवान्'।

आत्मा ज्ञान अथवा चेतना से नित्य पूर्ण रहता है। यह चेतना आत्मा का स्वरूप-लक्षण है। यदि आत्मा का अनुभव उसके अवस्थान—हृदय में न हो तो भी चेतना की उपस्थिति से उसके अस्तित्व का ज्ञान हो सकता है। मेघ अथवा किसी अन्य कारण से कभी-कभी आकाश में सूर्य दृष्टिगोचर नहीं होता, किन्तु सूर्यप्रकाश से हम जान सकते हैं कि यह दिन का समय है। प्रातःकालिक आकाश में थोड़ा सा भी प्रकाश होने पर हम समझ जाते हैं कि सूर्योदय हो गया। इसी प्रकार मानव, पशु, आदि सब देहों में न्यूनाधिक चेतना रहती ही है, जिससे आत्मा का अनुभव हो सकता है। परन्तु यह आत्म-चेतना परतत्त्व परमात्मा की चेतना से भिन्न है, क्योंकि